माण्डू
मध्ययुगीन वैभव

माण्डू 1970

माण्डू 2009

माण्डू, धार जिले में जिला मुख्यालय के दक्षिण में 35 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह समुद्र तल से 633.7 मी. की ऊँचाई पर स्थित मालवा के पठार से एक गहरी घाटी द्वारा विभाजित है, जिसको काकराखोह के नाम से जानते हैं। इसका प्राचीन नाम 'मण्डप दुर्ग' एवं 'माण्डव गढ़' मिलता है। यहाँ का इतिहास परमार काल से भी प्राचीन है, जैसा कि जैन तीर्थंकर आदिनाथ की तालानपुर, (कुक्सी, जिला धार) नामक स्थल से प्राप्त प्रतिमा से ज्ञात होता है जिस पर संस्कृत में विक्रम संवत् 612 (ई.सन 555) का एक लेख पादपीठ पर उत्कीर्ण है। लेख से पता चलता है कि यह प्रतिमा पार्श्वनाथ मंदिर तारापुर, मण्डप दुर्ग में एक व्यापारी चन्द्रसिम्हा द्वारा स्थापित करवाई गयी थी। तत्पश्चात् लगभग तीन शताब्दियों तक कन्नौज के गुर्जर प्रतिहार शासकों द्वारा किले को सैनिक छावनी के रूप में उपयोग किया गया। प्रतापगढ़ (राजस्थान) से प्राप्त विक्रम संवत् 1003 (सन् 946 ई0) के अभिलेख से राजा महेन्द्र पाल की जानकारी मिलती है। अभिलेख से ज्ञात होता है कि राजकुमार माधव ने उज्जैन के महान शासक के रूप में कार्य किया, जबकि उसका बलाधिकृत श्रीशर्मन माण्डू के राज्यपाल का कार्य संभालता था।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
भोपाल मण्डल

दुर्ग के अन्दर विक्रम संवत् 1125 (ई0 सन 1068) के एक अभिलेख से श्रीभट्टारक देवेन्द्र देव की जानकारी मिलती है, जो सम्भवतः एक मुख्य नायक था तथा धार के राजा उदयादित्य को नियमित भेंट–उपहार दिया करता था। उदयादित्य के उत्तराधिकारियों के कमजोर होने के कारण धार की जगह माण्डू को अपना मुख्य केन्द्र बनाया, क्योंकि माण्डू प्राकृतिक रूप से सुरक्षित एवं संरक्षित दुर्ग था, जहाँ पर सुरक्षा हेतु ज्यादा सैनिकों की आवश्यकता नही थी। इसी कारण माण्डू को राजधानी बनने का गौरव प्राप्त हुआ। अर्जुन वर्मन द्वारा मण्डप दुर्ग से जारी किये गये कुछ राजकीय अनुदान भी प्राप्त हुए हैं। लगभग सन् 1227 ई0 में शमसुद्दीन इल्तुतमिश ने मालवा, विदिशा और उज्जैन पर आक्रमण किया, परन्तु तात्कालीन परमार राजा देवपाल के द्वारा संधि करने के कारण माण्डू पर आक्रमण नही हुआ। प्रथम मुस्लिम आक्रमण से परमार राजा राजनीतिक रूप से दुर्बल हो गये तथा माण्डू से निरन्तर कमजोर शक्ति के साथ शासन करते रहे। राजा जयवर्मन के गौड़ुरपुरा, जिला–निमाड़ से प्राप्त ताम्रलेख से ज्ञात होता है कि उसने सन् 1256 ई. से सन् 1261 ई. तक माण्डू मे शासन किया। राजा जयसिम्हा द्वितीय, जयवर्मन का उत्तराधिकारी हुआ, जिसे वलीपुर, जिला धार के स्मारक स्तम्भ लेख में मण्डप दुर्ग का स्वामी कहा गया है। लगभग 1283 ई. में राजा भोज द्वितीय ने मालवा के राज्य को हस्तगत किया। रेवाकुण्ड से प्राप्त सात पंक्तियो वाले अभिलेख में उसका नाम मिलता है। दिल्ली सल्तनत के राजा जलालउद्दीन खिलजी ने मालवा के राजा भोज द्वितीय पर सन 1293 ई0 में आक्रमण किया।

माण्डू सन् 1305 ई. तक हिन्दू राजाओं के आधिपत्य में रहा। उस समय महालक देव माण्डू पर शासन कर रहा था। इसी समय माण्डू को दिल्ली सल्तनत् के अधीन कर लिया गया और मुस्लिम राज्यपालों द्वारा शासन की व्यवस्था की गयी। माण्डू दुर्ग में बिखरे हुए दीवारों के अवशेषों से स्पष्ट होता है, कि 14 वीं शताब्दी में दुर्ग में कुछ हिन्दू और जैन मंदिरों का निर्माण हुआ। मुस्लिम राज्यपालों ने धार को राजधानी बनाया परन्तु माण्डू में भी कुछ समय तक अवश्य रहे। मालवा के राज्यपाल दिलावर खां गौरी ने 1401 ई0 में मालवा को स्वतन्त्र राज्य एवं धार को नई राजधानी बनाया। दिलावर खां का पुत्र होशंगशाह 1405 ई0 में उसका उत्तराधिकारी बना तथा उसने धार की जगह माण्डू को राजधानी बनाया। होशंगशाह नें पहाड़ी की रक्षा प्राचीर का निर्माण करवाया। 1435 ई0 में उसकी मृत्यु हुई। उसके पुत्र गजनी खाँ ने मुहम्मद शाह के नाम से राज्य को हस्तगत किया। ई. सन् 1436 मे मुहम्मद शाह की मृत्यु के पश्चात् इस राजवंश का अन्त हो गया। माण्डू के प्रमुख राजाओं मे मुहम्मद शाह खिलजी ने सबसे अधिक प्रसिद्धि प्राप्त की। उसके समय में राज्य अत्यधिक समृद्धशाली था। अन्य सुल्तानो में गयासुद्दीन और गयासुद्दीन के शासनकाल में माण्डू में समृद्धि के लक्षण मिलते हैं। बाद में मालवा को गुजरात के राज्य का भाग बना दिया गया और यह राज्य 1534 ई0 तक गुजरात से शासित था। जब हुमायु ने सोनगढ़ दुर्ग पर आक्रमण किया तब बहादुर शाह माण्डू के सोनगढ़ दुर्ग से पलायन कर गया। आक्रमण के बाद जैसे ही हुमायूँ दिल्ली के लिये वापस गया उसके तुरन्त पश्चात् खिलजी राजवंश के भूतपूर्व अधिकारी मल्लू खां ने नर्मदा से लेकर विदिशा तक पूरे प्रदेश को एक स्वतंत्र राज्य बनाया तथा माण्डू को राजधानी बनाकर सन् 1536 ई0 में कादिरशाह की उपाधि धारण कर शासन करने लगा। कालांतर में माण्डू मुगल राजाओं के अधीन हो गया जिन्होने यहाँ अनेक भवनों का निर्माण करवाया।

यहाँ विभिन्न राजाओं के द्वारा बनाये गये महत्वपूर्ण स्मारकों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है :–

जामा मस्जिद

जामा मस्जिद :– सन् 1454 ई. में निर्मित जामा मस्जिद माण्डू की महत्वपूर्ण इमारतों में से एक है। ऐसा कहा जाता है कि यह मस्जिद दमिश्क में स्थित उम्यद मस्जिद का अनुकरण है। जामा मस्जिद का अदभुत दृश्य उसके सामने स्थित अशर्फी महल से दिखाई पड़ता है। मस्जिद जालियों, प्रार्थना कक्ष, सिरदल तथा छोटे गुम्बद आदि से अत्यन्त अलंकृत है। इस मस्जिद में ध्वनि संचार एवं प्रतिध्वनि रोकने के लिये व्यवस्था की गई है।

अशर्फी महल

अशर्फी महल :– अशर्फी महल वास्तविक रूप से एक मदरसा के रूप में बनाया गया था परन्तु बाद में इसको मुहम्मद शाह का मकबरा के रूप में विस्तृत कर दिया गया। अब इस मकबरे के अवशेष मात्र ही सुरक्षित हैं।

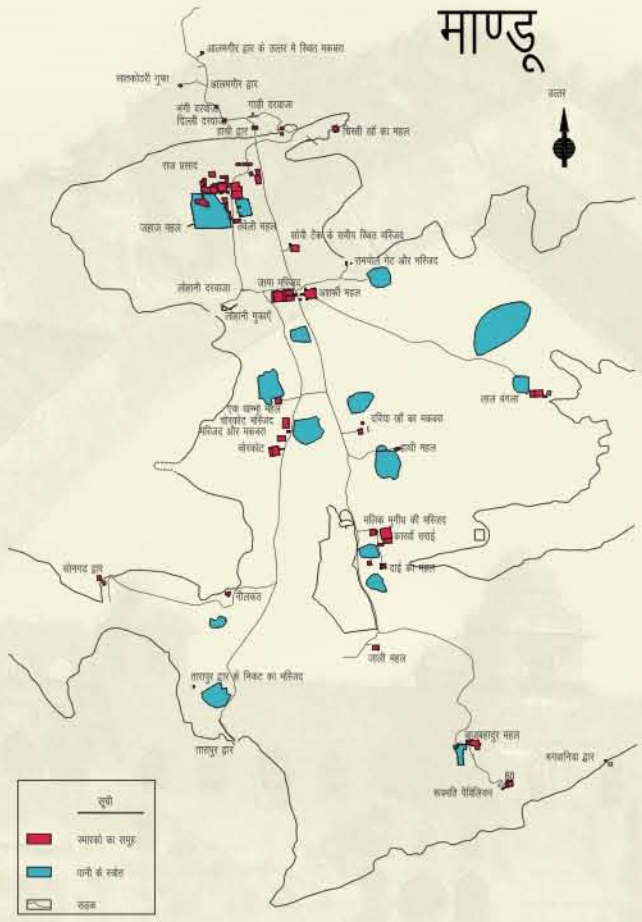

दिल्ली दरवाजा

द्वार :– रक्षा प्राचीर 12 दरवाजों सहित माण्डू के चारों ओर 45 कि.मी के परिधि में फैली हुई है। इन दरवाजों में दिल्ली दरवाजा दुर्ग में प्रवेश के लिये मुख्य प्रवेश द्वार है, जिससे होकर जाने वाले रास्ते में प्राचीर एवं बुर्जयुक्त श्रृंखलाबद्ध द्वार बने हैं, जैसा कि आलमगीर एवं भंगी दरवाजा जिससे वर्तमान सड़क गुजरती है। रामपोल दरवाजा, जहाँगीर दरवाजा तथा तारापुर दरवाजा किले के अन्य मुख्य प्रवेश द्वार हैं।

राजप्रसाद

जहाज महल

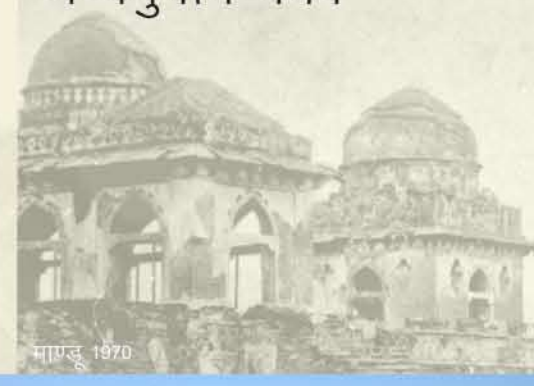

जहाज महल :– 120 मी. लम्बा जहाज महल दो कृत्रिम झीलों यथा मुंज तालाब एवं कपूर तालाब के मध्य में बनाया गया है, जो कि वस्तुतः दो मंजिला स्मारक है। सम्भवतः सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी ने इसे अपने हरम के लिये बनवाया था। खुला मण्डप, छज्जा, खुली छत द्वारा सुसज्जित जहाज महल प्रस्तर निर्मित एक अदभुत संरचना है।

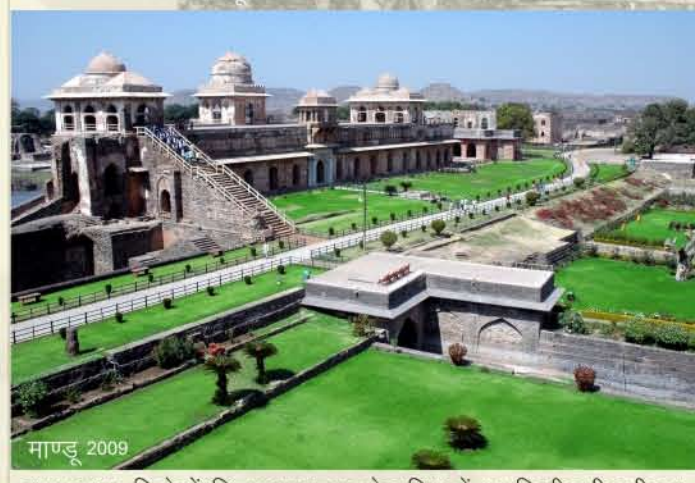

हिण्डोला महल

हिण्डोला महल :– वस्तुतः यह एक सभागार है, जिसका निर्माण गयासुद्दीन के शासन काल में हुआ था। हिण्डोला महल झूला राजप्रसाद भी कहलाता है। यह ग्यासुद्दीन खिलजी द्वारा बनवाया गया। इस ईमारत की पार्श्व की ढ़लवाकार दीवारों के कारण इसका नाम हिण्डोला महल (झूला महल) रखा गया। इस इमारत के अलंकृत फसाड, बलुए प्रस्तर में सुन्दर अलंकरण कार्य तथा उत्कृष्ट अलंकृत स्तम्भ के निर्माण में नवीन तकनीक का प्रयोग दिखाई देता है। हिण्डोला महल के पश्चिम दिशा में कई प्राचीन स्मारक हैं जिनको देखने से उनके वैभवशाली अतीत का आभास होता है। इन स्मारकों के मध्य चम्पा वावड़ी है, जिसमें गरम एवं ठंडे पानी की व्यवस्था हेतु भूमिगत कक्ष बनाये गये थे।

इसी परिसर मे और कई मुख्य स्मारक हैं जिनमें दिलावर खां की मस्जिद, नाहर झरोखा, तवेली महल, दो बड़ी बावड़ी (उजाली बावड़ी एवं अंधेरी बावड़ी) एवं गदाशाह की दुकान तथा घर दर्शनीय स्मारक हैं।

होशंगशाह का मकबरा

होशंगशाह का मकबरा :– उत्कृष्ट अफगान वास्तुशैली में निर्मित यह भारत का संगमरमर निर्मित सबसे प्राचीन स्मारक है। वृहद् गुम्बद, संगमरमर की बनी उत्कृष्ट जालियाँ, मुख मण्डप, तथा मुख्य गुम्बज के चारो कोनों पर एक–एक लघु मीनार बने हैं, जो इस स्मारक की असाधारण विशेषता प्रदर्शित करते हैं।

होशंगशाह के मकबरे की वास्तुकला से प्रेरित होकर अध्ययन करने हेतु शाहजहाँ ने चार वास्तुविदों का एक दल यहाँ भेजा, जिनमें उस्ताद हामिद भी शामिल था, जिसने ताजमहल के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।

बाज बहादुर पैलेस

बाज बहादुर पैलेस :– बाज बहादुर राजप्रसाद प्राकृतिक रूप से सुन्दर पहाड़ी की ढ़लान पर स्थित है। इस राजप्रसाद के मुख्य द्वार में प्रवेश हेतु 40 सोपानों की व्यवस्था है। मुख्य द्वार में प्रवेश करते ही दोनों तरफ सुरक्षा हेतु रक्षकों के कक्ष बने हुये हैं जिनकी छत गज पृष्ठाकार है। उक्त रास्ता मुख्यद्वार से आगे जाकर महल के बाहरी सभागार के मुख्यद्वार तक जाता है। मुख्य महल में विशाल खुला प्रांगण, सभागार एवं चारों ओर कक्ष बने हुये हैं। इसके मध्य में एक सुन्दर तालाब है। तदुपरान्त स्तम्भों की पंक्ति के उत्तर दिशा के मध्य में एक सुन्दर अष्टकोणीय कक्ष है। जिसमें मेहराब युक्त प्रवेश हैं जिससे सुन्दर बगीचा दिखाई देता है। इसी प्रकार सभागार का पूर्वी एवं पश्चिमी हिस्सा भी योजना में समान है। दक्षिण की ओर लगा हुआ एक हॉल बना है जिसमें दोनों ओर दो कक्ष बने हुये हैं और कमरे का प्रवेश पीछे की ओर है। जिससे दूसरे हॉल में पहुँचा जा सकता है। यह सभागार पूर्व की तुलना में छोटा है जो सम्भवतः राजप्रसाद के परिचारकों के द्वारा उपयोग किया जाता था।

रूपमती मण्डप

रूपमती मण्डप :– पहाड़ी के शिखर पर बाजबहादुर राजप्रसाद के दक्षिण में एक मण्डप है जो रानी रूपमती मण्डप के नाम से जाना जाता है। इस मण्डप के गहन सरचनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि इस मण्डप का निर्माण विभिन्न कालो में दो–तीन चरणों में किया गया। मूल संरचना के पूर्वी हिस्से में दोनों तरफ किनारों पर दो कक्ष व एक बड़ा कक्ष है। मण्डप की दीवार ढलवाकार है तथा मेहराब अनुपात में अधिक बड़े हैं। मण्डप की दीवारों के सबसे ऊपरी भाग में बने परकोटे का निर्माण मूल संरचना के साथ ही किया गया था। ऊपरी भाग में बिना कक्ष के बनी ईमारत का निर्माण सबसे पहले किया गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि शत्रुओं की हल–चल की स्थिति जानने के लिये रक्षकों हेतु इसका निर्माण किया गया। रूपमती मण्डप से नीचे लगभग 365 मी. की गहराई में स्थित निमाड़ मैदान दिखाई पड़ता है।

पेवेलियन एवं तवेली महल

तवेली महल :– तवेली महल तवेला का अपभ्रंश या बिगड़ा हुआ रूप है जिसका शाब्दिक अर्थ है "शाला" (जानवरों को रखने या बाँधने की जगह)। इस महल के भूतल पर जानवरों के रहने के लिए तथा ऊपर की दो मंजिलों पर रक्षकों के रहने के लिए बनाया गया। इसलिये इस महल को शालाओं का भवन (अस्तबल या जानवरो को बाँधने की जगह) कहते है। तवेली महल के छत से चारों ओर स्थित तालाब का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। वर्तमान में इस ईमारत के प्रथम तल को विभागीय विश्राम गृह एवं भूतल को संग्रहालय के रूप में उपयोग किया जा रहा है।

माण्डू

दर्शकों हेतु प्रवेश शुल्क
रुपये 5/– भारतीय, सार्क एवं विमटेक देशों के वर्यतकों हेतु
एवं रुपये 100/– अन्य विदेशी पर्यटकों हेतु।
15 वर्ष तक की आयु के लिय प्रवेश निःशुल्क है।
समय : स्मारक प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक दर्शकों हेतु खुले रहतें हैं।

अधीक्षण पुरातत्वविद्,
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण,
भोपाल मण्डल, जी.टी.बी. काम्पलेक्स, बी ब्लाक,
द्वतीय तल, टी.टी. नगर, भोपाल
फोन. न. –0755–2558250, 2558270
बेबसाइट –"मइेपजमूॅण्पदपबण्पद, ई–मेल – बपतबसमइीवचंस/हउंपसण्बवउ

HAZOORI D' SIGNS 9893111180

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण